पुस्तक समीक्षा

डॉ योगेन्द्र नाथ शर्मा ''अरुण''
पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग 74/3, न्यू नेहरु नगर, रूडकी-247667 (उत्तराखंड) भारत

हिंदी के अनन्य अनुरागी सेवी और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के रचनाकार श्री सुरेशचन्द्र शुक्ल ''शरद आलोक'' के कविता संग्रह ''लॉक डाउन'' की कई कविताओं को पढकर मुझे लगा कि कवि 'शरद आलोक' को वागीश्वरी माँ शारदा का आशीर्वाद मिला है, जिसके बल पर उन्होंने विश्वव्यापी संकट की इस घड़ी को भी उत्सव बना कर हिंदी-जगत को अपने ह्रदय का नवनीत दे दिया है।

''लॉक डाउन'' में माँ शीर्षक से रची गई उनकी भावपूर्ण रचना की अंतिम पंक्तियों में जो गंभीर प्रश्न आया है, उसे मैं वैश्विक चुनौती ही कहूँगा। कविता देखिए-

''850 किलोमीटर की दूरी को
सड़क पर
पैदल चलकर तय कर रही माँ।
ब्रिटेन में कोरोना से पीड़ित माँ
जन्म देकर खुद चल बसी।
भारत में जन्म देकर कोरोना पीड़ित माँ
अपनी संतान से वीडियो पर
कर रही संवाद।
कश्मीर में महीनों कर्फ्यू में खिड़की से
अपने बच्चे को दुनिया दिखाती माँ।
अपने बच्चे को दूध पिलाती
दुनिया की अनेक जेलों में बन्द,
कोरोना से बचाने के लिए
हाथ-सिलाई मशीन से
मास्क सिलती माँ।
महिलाओं की आधी आबादी होने,
फर भी संसद तक
आधा प्रतिनिधित्व नहीं ले सकी औरत।
अपने बच्चों को पालना छोडकर
राजनीति में उतरने की सोच रही औरत।
शायद कुछ समय तक
औरत नहीं बनेगी माँ?''

माँ की वात्सल्यमयी छवि देकर एक बेहद ज्वलंत प्रश्न उठाने वाले कवि ''शरद आलोक'' निस्संदेह आने वाले समय में ''माँ'' की बदलती छवि हमें दिखा रहे हैं। कवि का प्रश्न कुरेदता जरूर है।

एक दूसरी कविता है ''जोखिम में सफर'' जो व्यक्ति की अदम्य जिजीविषा को हमारे सामने मूर्तिमान कर देती है। इस कविता का कथ्य एवं शिल्प मेरी तरह आपको भी प्रभावित अवश्य करेगा-

''कोरोना से अब रहा न पहले वाला डर।
वायदों के न निभाने से परेशान?
चल पड़े मजदूर हैं, अपने-अपने घर,
हाथ पर लेकर जानउठाने
जोखिम से भरा सफर।
अभी भी निरंतर चल रहे,
अपनी सीमा लाँघते
प्रवासी मजदूर उठाने।
गाड़ियों पर चढ़े,
जैसे हों एवरेस्ट की चींटी,
जीवन को जोखिम में डालना
सीख गए प्रवासी मजदूर।
आज नहीं कल पास आ जाएंगे,
अपने-अपने मुकाम।
छूट गई नौकरी और काम।
संघर्ष है चलना मनुज का,
चाहे जितना कठिन हो मार्ग।
दशरथ मांझी सा जाग रहा पुरषार्थ,
उठो, अभी रुकना नहीं हे श्रमिक।
देश-दुनिया में सदा चलें,
जो प्रगति का सन्मार्ग।-नवज;

इस विचारोत्तेजक कविता ने अभी अभी बीते ''मई दिवस'' की याद ताजा करा दी है, जहाँ श्रमिक के संघर्ष की गाथाओं को भी ''लॉक डाउन'' इस बार निगल गया है। मैं बंधुवर श्री सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' को ह्रदय से बधाइयाँ देना चाहता हूँ कि उन्होंने हिंदी-जगत को अपनी कविताओं का उपहार देकर विश्व-त्रासदी को यादगार बना दिया है।